This question paper contains **4** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **703**

Unique Paper Code : **205640** **D**

Name of the Paper : **Hindi Language-B**

Name of the Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : **VI**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित अवतरणों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए :

(क) यह अन्न तो लेंगे विदेशी, लाभ क्या उनको कहो ?
मिलता उन्हें जो अर्द्ध भोजन विघ्न उसमें भी न हो !
कहते इसी से हैं कि क्या आजन्म मरना था उन्हें,
भिक्षुक बनाते पर विधे ! कर्षक न करना था उन्हें ! ॥ 8

अथवा

बिकता कहीं वर है यहाँ, बिकती तथा कन्या कहीं,
क्या अर्थ के आगे हमें अब इष्ट आत्मा भी नहीं !
हा ! अर्थ, तेरे अर्थ हम करते अनेक अनर्थ हैं –
धिक्कार, फिर भी तो नहीं सम्पन्न और समर्थ हैं ?

(ख) यही तो है मेरा काम-ताकत की डोर का पता लगाते रहना । राजनीति और है क्या ? उसके पीछे कोई दर्शन है क्या ? (हँसना) सुना है आप इस नौकरी से इस्तीफा देकर बाहर आना चाहते हैं । याद रखियेगा, हम उल्टे सरकार से ही आप पर मुकदमे चलवायेंगे । हम सैकड़ों आदमी आपके खिलाफ गवाही देकर जो चाहें, साबित कर देंगे । 7

अथवा

मैं इन्हें अखबार में छपवाऊँगा और लोगों को बताऊँगा—नौकरशाही पर खड़ा हुआ प्रजातंत्र कितना खोखला और बेमानी होता है । यह एक बिल्कुल नई साम्प्रदायिकता है, जो एक नये 'फासिज़्म' को जन्म देती है ।

(ग) जातियों में ब्राह्मण-महाशाल, क्षत्रिय सामंतों का उच्च स्थान था । इनके बाद सेट्ठिजन थे, जो धन संपदा में बहुत बढ़े-चढ़े थे । देश-विदेश का धन-रत्न इनके पास खिंचा चला आता था । उन दिनों देश में दस प्रतिशत ये सामन्त ब्राह्मण और नब्बे प्रतिशत सेट्ठिजन सर्वसाधारण की कमाई का उपयोग करते थे । इन 90 प्रतिशत में 20 प्रतिशत तो दास ही थे, जिनका समाज में कोई अधिकार ही न था । शेष 70 प्रतिशत जनसाधारण के तरुण इन सामंतों और राजाओं के निरर्थक युद्धों में अपने प्राण देने को बलात् विवश किये जाते थे और उनकी विवश युवती सुन्दरी कन्याएँ, उनके अन्तःपुरों की भीड़ में दासियों, उपपत्नियों आदि के रूप में रख ली जाती थीं । ब्राह्मण इन सामंतों और राजाओं को परम परमेश्वर घोषित करते, इन्हें ईश्वरावतार प्रमाणित करते और इनके सब ऐश्वर्यों को पूर्वजन्म के सुकृतों का फल बताते थे । इसके बदले में वे बड़ी-बड़ी दक्षिणाएँ फटकारते और स्वर्णभूषिता सुन्दरी दासियाँ दान में पाते थे । 8

अथवा

अपनी बत्तीसों पत्नियों को उसने अपने निकट बुलाकर कहा – "हे देवानुप्रियाओ, तुम सब प्रियदर्शना, मृदुभाषिनी, स्नेहमयी हो और मुझे प्राणाधिक प्रिय हो । परन्तु विनाश के दु:ख से यह संपूर्ण लोक जल रहा है । जैसे कोई गृहस्थ अपने जलते हुए घर में से मूल्यवान वस्तुओं को बचाने की चेष्टा करता है, उसी भाँति मेरी आत्मा भी बहुमूल्य है । वह इष्ट है, कान्त है; प्रिय, सुन्दर, मन के अनुकूल, स्थिर एवं विश्वासपात्र है । इसलिए भूख-प्यास, सन्निपात, परीषह तथा उपसर्ग उसकी हानि करे, इसके प्रथम ही उसे बचा लूँ, मैं यह चाहता हूँ । वह आत्मा मुझे परलोक में हितरूप, सुखरूप, कुशलरूप तथा परम्परा से कल्याणरूप होगा । इसलिए हे प्रियाओ, मैं चाहता हूँ कि प्रव्रजित होऊँ और प्रतिलेखनादि आचार क्रियाओं को सीखूँ । माता का उपदेश है कि मैं एक बार भी कठिन त्याग न करूँ । सो मैंने प्रतिदिन एकाशन करने और एक पत्नी को त्यागने की इच्छा की है । अब तुममें जो मुझे सबसे अधिक प्रेम करती हो, वह मेरे कल्याण के लिए स्वेच्छा से मुझे आज बन्धन मुक्त करे – इसके बाद दूसरी, फिर तीसरी ।"

2. 'भारत-भारती' के 'वर्तमान खंड' का मूल प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए । 15

अथवा

'हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी' पंक्ति के माध्यम से गुप्त जी किन समस्याओं की ओर संकेत कर रहे हैं, 'भारत-भारती' के आधार पर उत्तर दीजिए ।

3. ''मिस्टर अभिमन्यु' नाटक का पात्र 'राजन' व्यवस्था के साथ तालमेल नहीं बैठा पाता' इस कथन के आलोक में इस नाटक की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए । 15

अथवा

'मिस्टर अभिमन्यु' नाटक के आधार पर विमल का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

4. 'वैशाली की नगरवधू' उपन्यास की मूल संवेदना को रेखांकित कीजिए । 15

अथवा

'वैशाली की नगरवधू' उपन्यास में अम्बपाली का चरित्र स्त्री मुक्ति का प्रतीक है या गुलामी का, स्पष्ट कीजिए ।

5. किसी **एक** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : 7

(क) 'मिस्टर अभिमन्यु' की नाट्यभाषा

(ख) 'भारत-भारती' की काव्यभाषा

(ग) 'वैशाली की नगरवधू' की कथाभाषा ।